उत्तराखण्ड में खाद्यान्न उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु रबी उत्पादकता बढ़ायें–डा. बिष्ट

पंतनगर। 21 अगस्त, 2009। सूखे की वर्तमान परिस्थिति में खरीफ मौसम में खाद्यान्न उत्पादन में कमी की आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए आगामी रबी मौसम में फसलों की उत्पादकता को कम से कम 10 प्रतिशत बढ़ाने की आवश्यकता है, यह बात आज पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित 'रबी फसलों की सघन पद्धतियाँ 2009–10' पुस्तिका के नवीनीकरण हेतु आयोजित बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कही। बैठक में उत्तराखण्ड के कृषि निदेशक श्री मदन लाल भी मंचासीन थे।

डा. बिष्ट ने कहा कि हमें ऐसी तकनीकियों को विकसित करने पर जोर देना होगा, जिनसे कम नमी की दशा में भी फसलों से अधिकतम उत्पादन लिया जा सके। उन्होंने रबी फसलों की अच्छी उपज हेतु उच्च गुणवत्ता वाले बीजों तथा अन्य कृषि निवेशों की उपलब्धता समय से सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया। डा. बिष्ट ने कोर वैली बीज उत्पादन परियोजना की महत्ता को भी रेखांकित किया। डा. बिष्ट ने रबी फसलों की उत्पादकता व उत्पादन बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय के वाह्य शोध केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा कृषि विभाग को एक साथ मिलकर काम करने के लिए कहा ताकि कृषि की विकास दर को 5–6 प्रतिशत या इससे ऊपर रखा जा सके।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अधिष्ठाता कृषि, डा. जे.पी. तिवारी ने रबी फसलों के अंतर्गत अधिक से अधिक क्षेत्रफल आच्छादित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि फसलों के साथ–साथ सब्जियों, औद्यानिकी तथा औषधीय एवं सगन्ध पौधों की फसलों पर भी समुचित ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

निदेशक शोध, डा. डी.पी. सिंह ने रबी फसलों हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियों एवं विशिष्ट तकनीकियों का समावेश करने के लिए कहा। उन्होंने खाली पड़े खेतों के सदुपयोग हेतु शीघ्र तैयार होने वाली फसलों की बुआई की चर्चा की।

प्रदेश के कृषि निदेशक, श्री मदन लाल ने रबी फसलों हेतु राज्य सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों एवं विभागीय कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों के लिए कृषि से जुड़े लाभकारी उद्य्मों की तकनीकी जानकारी देने की आवश्यकता बतायी। उत्तराखण्ड की जलवायु विविधता के कारण क्षेत्र के अनुसार माइक्रोप्लानिंग की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। इस कार्यशाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. के.आर. कनौजिया ने कहा कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों की अधिकतर खेती वर्षा पर आधारित है। मौसम के मिजाज में परिवर्तन का असर खेती पर पड़ रहा है।

निदेशक शोध, डा. डी.पी. सिंह की अध्यक्षता में विभिन्न तकनीकी सत्रों में 'रबी फसलों की सघन पद्धतियाँ 2009–10' नामक पुस्तिका के खाद्यान्न फसलों, तिलहन, दलहन, औद्यानिक एवं चारा फसलों, गन्ना, जैविक खेती, एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन एवं उन्नत कृषि यंत्रों से सम्बन्धित अध्यायों में विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा के वैज्ञानिकों तथा प्रदेश के कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा गहन विचार–विमर्श करके संशोधित अन्तिम रूप दिया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रसार शिक्षा निदेशालय के सह निदेशक (पादप सुरक्षा), डा. राजेश प्रताप सिंह ने किया। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन संयुक्त निदेशक प्रसार, डा. टी.पी. सिंह ने किया।

ई.मेल. चित्र सं.–1.बैठक में मंचासीन कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट (मध्य में), श्री मदन लाल (सबसे बायें) एवं अन्य वैज्ञानिक।